रहनी तो प्रेम ही है अर्श की रूहों की
रहनी है कहनी नहीं अर्श की रूहों की
हो...रूहों की रीत नहीं जग की
1-पिया बिना कुछ और न चाहें,
झूठे बंधन न ये भायें
पिंड ब्रह्माण्ड पल में उड़ावें,
कर कुरबानी पिया को रिझायें
ये ही पहचान है अर्श की रुहों की
2- जीव को जतन करे,
ध्यान हमेशां वतन धरें
एक बात रहे रूहों के दिल में,
कब हम जागें परआत्म में
पिया की सूरत रहे चितवन में रूहों की
3- शुक्र गरीबी सब्र करें,
वचन पिया के दिल में धरें
इश्क ईमान ही रीत रूहों की,
धाम धनी से प्रीत रूहों की
खिलवत के सुख लेवें निसबत है रूहों की

Nijanand App